ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 247-249
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

जनवादी कवि और आधुनिक युग के कबीर ''नागार्जुन''

अर्जुन पासवान
शोध अध्येता– हिन्दी विभाग, काटन विश्वविद्यालय, गोहाटी (आसाम), भारत

Received- 13.07.2020, Revised- 16.07.2020, Accepted - 20.07.2020 E-mail: chandraharish054@gmail.com

सारांश : *जनता मुझसे पुछ रही है क्या बतलाउ ।*
जनकवि हूं मैं,साफ कहुंगा क्यों हकलाऊं ।।

आधुनिक हिंदी साहित्य के बड़े प्रख्यात जनवादी साहित्यकार थे बाबा नागार्जुन। जनवादी कवि की भांति उन्होंने हमेशा अपने देश, समाज की जनता के हितैषी बने रहे। यही कारण भी था वे आजीवन किसी एक विचारधारा से जुड़े नहीं रहे, उनकों जनता के भूख मिटाने के लिए जिन जिन विचारधाराओं में उनको तनीक भी उम्मीद दिखती,वे उसे स्वीकार लेते, हालाकि किसी विचारधारा ने उनकों संतुष्ठ नहीं किया। एक साहित्यकार का व्यक्तित्व जिस प्रकार उसकी कृतित्व को प्रभावित करता है, उसके सशक्त उदाहरण थे हमारे– बाबा नागार्जुन।
"जो विचारधारा भूखे को दो वक्त की रोटी और तन ढकने के लिए कपड़े देगी मैं उस विचारधारा के साथ चल दुंगा" (बाबा नागार्जुन)।

आधुनिक हिंदी साहित्य में भारतीय ग्रामीण समाज के पीड़ित, शोषित, किसान, मजदूर वर्ग के जीवन का चित्रण यथार्थ रूप में पाठकों के सामने रखने वाले साहित्यकारें में प्रेमचंद के बाद नागार्जुन का ही नाम आता है। ग्रामीण क्षेत्रों में दलित वर्ग पर हो रहे सामाजिक अत्याचार और शोषण का घृणित चित्र खिंचने तथा उसके उपचार को अपने साहित्य का आधार बनाने के कारण बाबा नागार्जुन कों जनवादी साहित्यकार माना जाने लगा। देश में फैल रही धार्मिक रूढ़ियों के कारण अपने हिंदू धर्म को छोड़ श्रीलंका में बौद्ध धर्म की दीक्षा लेने के कारण ही उनका नाम "नागार्जुन" पड़ा। अपनी इन्ही स्वभावें और बेबाकीपन के कारण इन्हें आधुनिक युग का कबीर भी कहा जाता है। अपनी स्पष्ठ कथन, क्रांतिकारी व्यक्तित्व तथा शैली के कारण इन्होंने हिंदी साहित्य में अपनी एक अलग स्थान बनाया, जो हमारे लिए सदैव आदरणीय रहेगा।

कुंजीभूत शब्द– जनवादी , साहित्यकार, विचारधारा, अनुभव, पीड़ित, शोषित, किसान, मजदूर, आधुनिक ।

लेख का सौंदर्य – एक ब्राह्मण परिवार में जन्में नागार्जुन का बचपन का नाम 'वैद्यनाथ मिश्र' रखा गया। ब्राह्मण परिवार के होने के कारण इनकी प्रारांभिक शिक्षा संस्कृत में हुइ। पिता के घुम्मकड़ प्रवृति ने इन्हें बेहद प्रभावित किया। नागार्जुन कई भाषाओं के जानकार थे। बनारस के क्वीस कालेज से अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद वे सामाजिक कार्यों में लिप्त हों गए।

आधुनिक हिंदी कविता को छायावादी संस्कारों से मुक्त करते हुए, उसे एक नवीन दिशा निश्चित कराने में इनका योगदान महत्वपूर्ण रहा । अपनी पत्नी की असीम स्नेह के बावजूद भी पिता की नफरत और ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा आदि कारणों ने उन्हें अपना घर त्याग करने पर मजबूर कर दिया। घुमक्कड़ प्रवृत्ति के कारण वे आजीवन किसी एक जगह पर टिके नहीं रहें, इसलिए अपनी गांव तथा परिवार वालों से कम ही मिलते। इसीसे वे संपूर्ण भारतवासियों की जनताओं की पीड़ा कों नजदीक से जान तथा समझा सके। हिंदी, मैथिली, संस्कृत और बांग्ला भाषा में उन्होंने अपनी कविता, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, यात्रा–वृत्तांत, बाल–साहित्य आदियों की रचनाएँ की।

उन्होंने अपनी साहित्य में हमेशा जनता का पक्ष लिया। गरीब मजदूरों, कृषकों की समस्याओं को देखकर वे व्याकुल हो जाते हैं। गरीब मजदूर एक समय भर पेट खाना नहीं खा पाता वहीं पूँजीपति बड़ी–बड़ी पार्टियों में ढेरों प्लेट खाना बर्बाद करता है, उच्च वर्ग भोग विलास आदि में धन बर्बाद करते हैं। ऐसे भारत की तस्वीर नागार्जुन पेश करते हैं राजनीतिक व्यंग्य उनकी कविताओं का सबसे प्रमुख हिस्सा रहा है। उन्होंने अपनी मार्क्सवादी चेतना के आधार पर गाँधी का भी विरोध किया। अपनी इन्हीं प्रकृति के कारण उन्हें जनता ने अपना जनकवि माना और उन्हें आधुनिक हिन्दी का कबीर से सम्बोधित किया जाने लगा। प्रगतिवादी साहित्य की सामान्य विशेषताएँ जो उनकें साहित्य में परिलक्षित होते हैं। जिनमें समाजवादी यथार्थवाद सामाजिक यथार्थ का चित्रण, प्रकृति के प्रति लगाव, राष्ट्रीयता, सांप्रदायिकता का विरोध, बोधगम्य भाषा व व्यंग्यात्मकता,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

मुक्त छंद का प्रयोग (मुक्त छंद का प्रयोग)। इसी के माध्यम से उन्होंने छायावाद में प्रगतिवाद की नींव रखी और अपने साहित्य को एक नवीन दिशा प्रदान की और जनवादी कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए।

लेख का महत्व– अपनी स्पष्ट विचार, सिधा कथन और धारदार शब्द का संतुलित व्यक्तित्व थे बाबा नागार्जुन। स्वतंत्र पूर्व भारत की गांव तथा कस्बे की लोगों की जो दयनीय स्थिति थी उसे बाबा नागार्जुन ने अपने साहित्य का आधार बनाया। नागार्जुन राष्ट्र और समाज को केंद्र में रखकर राजनीति करते थे। उन्होंने अंग्रेजी साम्राज्य के शोषणकारी व्यवस्था के लिए काफी तिखा व्यंग्य किया, जिसके लिए उन्हें कई बार कम्युनिस्ट भी कहा गया।

रोजी–रोटी हक की बातें, जोभी मुंह पर लाएगा,
जो भी हो वो निश्चय ही कम्युनिस्ट कहलाएंगा ।।

जब चीन ने भारत पर हमला किया तो वे क्रोधित होकर आलोचना करने वाली व्यंग्यात्मक कविताएं लिख डाली। जिससे शासकवर्ग भी इनसे नाराज होती चली गई। इसी तरह जनता की भूख और मौलिक संसाधनों को अनदेखा करते हुए कंपनी सरकार अपनी सैनिकों को सशक्त बनाए रखने में ध्यान देते थे,जो समयानुसार उनके लिए युद्ध करने के लिए तैयार रहते थे। इसके फलस्वरूप देश के कई जगहों में अकाल से लोगों को दम तोड़ते हुए देखने को मिला। बंगाल के इसी एक दृश्य को आधार बनाकर नागार्जुन ने इस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं–

कई दिनों तक चूल्हा रोया
चक्की रही उदास।
कई दिनों तक कानी कुतियां
सोई उसके पास।।

देश में स्वाधीनता के बाद भी जब देशवासियों को शांति और समृद्धि की झलक तक नहीं दिख रही थी। वहीं दूसरी ओर हमारे राजनेता देश की गंभीर समस्याओं को एक ओर करते हुए अपनी अपनी जेबें भरने की फिराक में थे। यह दशा समाज में पतन का कारण बन गयी थी और उसी महंगाई के दौर में अपने लोगों की मार्मिकता को समझने की अपेक्षा सरकार अपने लाभ के लिए कार्य करते रहे, जिसमें 1961ई. की इंग्लैंड की रानी एलीजावेथ का भारत भ्रमण के संदर्भ में सरकार की खुशी और उनके तैयारियां भारतीय जनता को रास नहीं आ रही थी, जिसको क्रांतिकारी कवि बाबा नागार्जुन इस प्रकार व्यंग्य करते हुए कहते हैं।

आओ रानी हम ढोएंगे पालकी
यही हुइ राय जवाहर लाल की।

नागार्जुन जनवादी कवि थे, इसलिए जनता की मांग को अपनी साहित्य के माध्यम से हमेशा अभिव्यक्त किया। वे संपूर्ण क्रांति से भी प्रभावित थे, इसलिए वे जयप्रकाश नारायण के संपर्क में वे आये और उनके विचारों एवं राजनीति से परिचित होकर उनके साथ काम करने लगे। नागार्जुन संपूर्ण क्रांति आंदोलन से जुड़े रहे और 1975 में उन्हें जेल भेज दिया और फिर इंदिरा सरकार तथा उनके कारनामों से तंग आकर उन्होंने कई कविताएँ लिख डाली, जिसमें उन्होंने इंदिरा की सरकार तथा इंदिरा गांधी पर तीखा व्यंग्य किया है।

'अब तो बंद करो हे देवी यह चुनाव का प्रहसन।'

नागार्जुन की मूल चेतना सामाजिक अन्याय के प्रतिकार में व्यक्त होती है। उनके नजरिए में आजादी से पहले और आजादी के बाद के भारत में औपचारिक अन्तरों को छोड़कर कुछ खास परिवर्तन नहीं हुआ, नहीं भूख कम हुई, न ही अशिक्षा। वंचित वर्गों के साथ होने वाला अन्याय नागार्जुन ने इन सभी पक्षों को अपनी कविता में खुलकर व्यक्त किया है। सरकार की पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा होने वाली मन्दी और शिथिल प्रगति पर नागार्जुन ने व्यंग्य किया है। भ्रष्टाचारी व टिकट बाजारी पर नागार्जुन का व्यंग्य सराहनीय रहा है–

आजादी की कलियाँ फूटी, पाँच साल में होंगे फूल।
पाँच साल में फल निकलेंगे, रहे पन्त जी झूला झूल।।
देश हमारा भूखा नंगा घायल है बेकारी से ।
मिले न रोटी रोजी भटके दर दर बने भिखारी से।।
खादी ने चुपचाप मलमल से साँठ – गाँठ कर डाली है।
बिड़ला, टाटा, डालमिया की तीसों दिन दिवाली है।।

इतना होने पर भी उनकी कुछ कविताएं छायावाद की परिवेश को अछूते नहीं हैं। वे नागार्जुन राहुल सांकृत्यायन एवं निराला जी से बेहद प्रभावित थे और इसलिए भी शायद इनमें प्रगतिवाद की भावधारा कूट–कूट कर भरा हुआ है। अपनी साहित्यिक कृतियों से योगदान देने के कारण इनको–"साहित्य अकादमी –1969 (मैथिली में, 'पत्रहीन नग्न गाछ' के लिए)।

– भारत भारती सम्मान (उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ द्वारा)।
– मैथिलीशरण गुप्त सम्मान (मध्य प्रदेश सरकार द्वारा)।
– राजेन्द्र शिखर सम्मान –1994 (बिहार सरकार द्वारा)।
– साहित्य अकादमी की सर्वोच्च फेलोशिप से भी इन्हें सम्मानित किया गया।

उपसंहार– नागार्जुन के काव्य में अब तक की पूरी भारतीय काव्य–परंपरा ही जीवंत रूप में उपस्थित देखी जा सकती है। जिस तरह कबीर ने अनभय साँचा और घर फूंक मस्ती का आक्रामकता लेकर अपने समय की

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

ताकतों पर चोट की वैसे ही नागार्जुन ने भी अपने समय के सभी शक्तियों से लोहा लिया। उनका कवि–व्यक्तित्व कालिदास और विद्यापति जैसे कई कालजयी कवियों के रचना–संसार के गहन अवगाहन, बौद्ध एवं मार्क्सवाद जैसे बहुजनोन्मुख दर्शन के व्यावहारिक अनुगमन तथा सबसे बढ़कर अपने समय और परिवेश की समस्याओं, चिन्ताओं एवं संघर्षों से प्रत्यक्ष जुड़ाव तथा लोकसंस्कृति एवं लोकहृदय की गहरी पहचान से निर्मित है।

नागार्जुन जन जन के वर्गों के कवि हैं। वे स्वयं की वेदना तक सीमित नहीं रहे बल्कि जनताओं के दुख दर्द का चिन्तन करते हुए उसपर अपनी कलम चलाई, निःसन्देह ऐसा ही व्यक्ति भारत की निम्नवर्गीय जन सांस्कृतिक वर्ग की प्रतिनिधित्व कर सकता है। जिसके कारण उनको जनवादी कवि कहना सार्थक हो जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आज के लोकप्रिय हिंदी कवि नागार्जुन', डॉ. प्रभाकर माचवे।
2. बाबा नागार्जुन, नरेंद्र कोहली।
3. नागार्जुन की कविता, अजय तिवारी।
3. नागार्जुन का रचना संसार, विजय बहादुर सिंह।
4. नागार्जुन जीवन और साहित्य, डॉ. प्रकाशचंद्र भट्ट।

*****